DOI: 10.51220/hjssh.v7i1.3

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 7 pp.17 - 27, December, 2012, ISSN. 0975 - 9891

सिरमौर-मुग़ल सम्बन्धः एक कूटनीतिक एवं सामरिक अध्ययन (सन् 1556-1707)

रेहाना ज़ैदी

इतिहास विभाग,

हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Received: 8-09-2012 **Revised: 13-11-2012** **Accepted: 24-12-2012**

Abstract

मुग़लकाल के अधिकांश इतिहास लेखकों ने अपना ध्यान मुख्यतः बड़े राज्यों के साथ मुग़ल शासकों के सम्बन्धों पर ही केन्द्रित रख कर इतिहास लेखन किया है। अतः मुग़ल साम्राज्य की सीमाओं के भीतर और सन्निकट अवस्थित छोटे राज्यों के साथ मुग़ल शासकों के राजनीतिक-कूटनीतिक सम्बन्धों का वस्तुतः विश्लेषण नहीं हो सका है, जबकि अनेक छोटे राज्यों के मुग़ल शासकों (केन्द्रीय सत्ता) के साथ सम्बन्ध भी अत्यधिक महत्वपूर्ण थे। प्रस्तुत आलेख में हिमालयी क्षेत्र में अवस्थित एक ऐसे ही छोटे से, परन्तु सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण राज्य सिरमौर के साथ मुग़ल शासकों के राजनीतिक-कूटनीतिक सम्बन्धों का अध्ययन-विश्लेषण किया गया है।

KEYWORDS: सिरमौर-मुग़ल सम्बन्ध, तथ्यपरक विवेचन

I

वर्तमान समय में सिरमौर हिमाँचल प्रदेश का एक बड़ा जनपद है, जो हिमाँचल एवं उत्तराँचल की सीमाये बनाता है। हमारे अध्ययनकाल (सन् 1556-1707) में सिरमौर दिल्ली के उत्तर में अवस्थित एक पहाड़ी राज्य था। इस पहाड़ी राज्य की लम्बाई पूर्व से पश्चिम की ओर लगभग 50 मील तथा उत्तर से दक्षिण की ओर चौड़ाई लगभग 45 मील थी। प्राचीनकाल में सिरमौर राज्य की राजधानी सिरमौरी ताल थी। सम्भवतः इसी राजधानी के नाम पर इस राज्य का नाम सिरमौर पड़ा। युवान च्वांग के विवरणों से ज्ञात होता है कि प्राचीनकाल में यह पर्वतीय क्षेत्र स्त्रधन के नाम से जाना जाता था। सिरमौर का पर्वतीय एवं तराई क्षेत्र बौद्ध बाहुल्य क्षेत्र था।[1] सिरमौर का प्राचीन इतिहास क्रमबद्ध रूप में उपलब्ध नहीं है। पुरातत्ववेत्ताओं का अभिमत है कि किसी सूर्यवंशी राजपूत राजा द्वारा ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस राज्य की स्थापना हुई थी।[2] सन् 1206 में उत्तर भारत में हुए सत्ता परिवर्तन एवं दिल्ली सल्तनत की स्थापना के फलस्वरूप सिरमौर के राजाओं की स्थिति में क्या परिवर्तन आया और उत्तर भारत में हुए सत्ता परिवर्तन की क्या प्रतिक्रिया इस पर्वतीय अंचल में हुई? इस विषय में स्थानीय इतिहास-ग्रन्थ मौन है। समकालीन फ़ारसी वृतांतकारों के ग्रन्थों से यह ज्ञात होता है कि दिल्ली सल्तनत के आरम्भिक सुल्तानों द्वारा सिरमौर की पादचोटियों सहित शिवालिक पर्वत श्रेणियों पर अधिकार कर लिये जाने के फलस्वरूप सिरमौर के राजाओं ने अधिक ऊँचाई वाले सामरिक महत्व के स्थानों पर अधिकार कर अपनी सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ कर लिया।

©SHARAD

मिन्हाज-उस-सिराज के विवरणों से ज्ञात होता है कि सन् 1256-57 में सिरमौर पर्वतीय प्रदेश के राणा दलपत हिन्दी ने दिल्ली के सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद के एक विद्रोही अमीर कुतुलुग़ ख़ाँ को अपने राज्य में शरण प्रदान की थी। मिन्हाज सूचित करता है कि राणा दलपत हिन्दी के सहयोग से सुल्तान के विद्रोही अमीर कुतलुग़ ख़ाँ ने सिरमौर के पर्वतीय प्रदेश में ही कहीं अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित कर ली थी। प्रधानमंत्री उलुग खाँ (बल्बन) ने शाही सेना को कुतुलुग़ ख़ाँ का दमन करने का आदेश दिया। सेना ने आदेश प्राप्त कर कुतलुग़ ख़ाँ के दमन के लिए दिल्ली से प्रस्थान किया। शाही सेना का सामना करने के लिए कुतलुग खाँ सन्तूरगढ़ गया। राणा दलपत हिन्दी एवं कुतलुग़ खाँ ने शाही सेना का सामना किया, परन्तु पराजित हुए और वहां से भाग निकले। शाही सेना ने संतूरगढ़ पर अधिकार कर लिया।[3] सन्तूरगढ़ के पतन ने निश्चित ही सिरमौर के राजवंश के लिए संकट उत्पन्न कर दिया होगा।

तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भी सिरमौर की पादचोटियाँ दिल्ली सल्तनत के विद्रोहियों एवं सत्ता-प्राप्ति के संघर्ष में असफल रहे तुर्क-अफ़गान प्रत्याशियों की शरण-स्थली बनी रहीं। चौदहवीं शताब्दी में मौहम्मद-बिन-तुग़लक एवं फ़िरोज़ तुग़लक द्वारा काँगड़ा पर आक्रमण किये गये, परन्तु शीघ्र ही काँगड़ा के राजा ने इन सुल्तानों के साथ सम्बन्ध सुधार लिये। कतिपय स्थानीय इतिहास लेखकों के अनुसार यद्यपि चौदहवीं शताब्दी में सिरमौर सहित पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र के राज्य स्वतन्त्र थे, परन्तु वह दिल्ली सुल्तान को ख़िराज और नजराना देते थे। याहिया-बिन अहमद के विवरणों से भी ज्ञात होता है कि सन् 1379 में सुल्तान फिरोज तुग़लक सहारनपुर की पहाड़ियों में दाख़िल हुआ और उसने पहाड़ी राजाओं से ख़िराज वसूल किया।[4] लोदी सुल्तानों के समय में भी यही स्थिति बनी रही।

सन् 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध, लोदीवंश के पतन एवं मुग़ल राजवंश के सत्तासीन होने आदि से उत्तर भारत मे हुए सत्ता परिवर्तन की कोई तात्कालिक प्रतिक्रिया सिरमौर एवं उसके निकटवर्ती पर्वतीय अंचल में नही हुई। आरम्भिक मुग़ल शासक बाबर तथा हुमायुँ अपनी आन्तरिक समस्याओं में व्यस्त रहे और इस पर्वतीय अंचल की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दे सके, परन्तु अकबर के राज्यारोहण के तुरन्त पश्चात इस क्षेत्र में मुग़लों की सैनिक एवं प्रशासनिक गतिविधियां आरम्भ हो गयी। अकबरनामा से ज्ञात होता है कि अकबर ने इस क्षेत्र के सबसे बड़े और सर्वाधिक सम्पन्न राज्य कांगड़ा पर अधिकार कर लिया था। तत्पश्चात सम्राट अकबर ने सन् 1573-74 में सिरमौर राज्य के पश्चिम मे स्थित पर्वतीय प्रदेश बीरबल को सौंप दिया था।[5] यह व्यवस्था इस पर्वतीय अंचल के राजाओं एवं भू-स्वामियों को मान्य न थी। अतः उन्होंने मुग़ल आधिपत्य को समाप्त करने के लिए प्रयास आरम्भ कर दिये। सम्राट अकबर द्वारा इस पर्वतीय अंचल पर मुग़ल आधिपत्य को स्थायी बनाये रखने का दायित्व सूबा पंजाब के तत्कालीन सूबेदार ख़ानेजहाँ कुली को सौंपा गया।[6] यद्यपि मुग़ल सेना इस क्षेत्र में शान्ति स्थापित करने में सफल हुई, तथापि उसकी यह सफलता अस्थायी ही रही। आईन-ए-अकबरी एवं मआसिर-उल-उमरा से ज्ञात होता है कि सन् 1591 में काँगड़ा-नगरकोट के राजा बुद्धिचन्द, मानकोट के राय प्रताप, जम्मू के परुषराम, मऊ के राजा बसु, लक्खनपुर के राय बलभद्र, जसावाँ के राजा अनुरुद्ध, कमलूरी के राय, धावल के राजा जगदीश, पाणा के राय दौलत, बलूरिया के रायकृष्ण, धमिरवाल के राय राधे आदि ने एक संघ बनाकर मुग़ल आधिपत्य को समाप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास किया।[7] कठिन संघर्ष एवं अनेक रक्तरंजित युद्धों के पश्चात मुग़ल सेनानायक ज़ैन ख़ां कोका आदि पहाड़ी

राजाओं द्वारा खड़ी की गयी 100,000 पैदल एवं 10,000 घुड़सवार सेना को पराजित करने में सफल हुए।[8]

सन् 1597 में इन पर्वतीय राजाओं ने मुग़ल सत्ता के प्रतिरोध के लिए पुन: एक सामूहिक प्रयास किया। इन पहाड़ी राजाओं के दमन के लिए मुगल सेनानायकों रूस्तम ख़ां, शेख़ फ़रीद बख़्शी आदि को नियुक्त किया गया।[9] यद्यपि मुग़ल सेना पहाड़ी राजाओं का दमन करने में सफल रही, फिर भी इस पर्वतीय अंचल में मुग़ल आधिपत्य के स्थायित्व के लिए संकट बना रहा।

मुग़ल सम्राट जहांगीर ने इस समस्या के स्थायी समाधान के लिए इस पर्वतीय अंचल को पूर्ण रूप से विजित कर मुग़ल साम्राज्य में विलीनीकरण की सुनिश्चित एवं सुनियोजित योजना बनाई। योजनानुसार सन् 1615 से 1620 तक मुग़ल सेनायें इस पर्वतीय अंचल की घाटियों एवं चोटियों में निरन्तर संघर्ष करती रहीं। अन्तत: सन् 1620 में मुग़ल सेना ने काँगड़ा, हारा-पहाड़ी, ठट्टा, जसरोटा, सूरज़्वाली, कोटिला, चम्बा, मऊ, महारी आदि दुर्गों पर अधिकार कर लिया।[10] इस विजय अभियान के पश्चात इस पर्वतीय अंचल को सरकार दामन-ए-कोह काँगड़ा के रूप में संगठित कर शान्ति एवं व्यवस्था स्थापित कर दी गयी।

II

उक्त विवरण से ज्ञात होता है कि सन् 1591 से 1620 तक सिरमौर की पश्चिमोत्तर सीमा से जुड़ी सभी पहाड़ी रियासतों ने मुग़ल सत्ता के प्रतिरोध के लिए संघर्ष किया, परन्तु उनमें सिरमौर राज्य का उल्लेख एक बार भी प्राप्त नहीं होता है। अत: प्रश्न उठता है कि क्या ऐसी दशा में सिरमौर के राजा उदासीन रहे होंगे? क्या ऐसी परिस्थितियों में वह मुगल सम्राट अकबर एवं जहाँगीर के समर्थक बने रहे होंगे? सिरमौर के राजाओं द्वारा सन् 1591 से 1620 तक शाही पक्ष ग्रहण करने का भी कोई प्रत्यक्ष एवं सबल साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। अत: इस काल में सिरमौर-मुगल सम्बन्धों की समीक्षा कर पाना एक दुष्कर कार्य है, परन्तु यह पूर्णतया स्पष्ट है कि सम्पूर्ण सोलहवीं शताब्दी में मुग़ल सेना ने सिरमौर के विरुद्ध कोई सैनिक अभियान नहीं किया। कतिपय समकालीन एवं परवर्ती इतिहास लेखकों के ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि सिरमौर के राजा प्रतिवर्ष फ़रवरी-मार्च से सितम्बर तक शाही भोजनालय के लिए हिमालय का प्राकृतिक बर्फ़ राजधानी भेजते थे। इसीलिये अनेक समकालीन इतिहास लेखकों ने सिरमौर के राजाओ का उल्लेख 'बरफी राजाओं' के नाम से किया है।[11]

सिरमौर के राजा भूपतप्रकाश (सन् 1605-1615) एवं उदयचन्द प्रकाश (सन् 1615-1616) मुग़ल सम्राट जहाँगीर के समकालीन थे, परन्तु 'तुज़्क-ए-जहाँगीर' में उनका कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं है।[12] चरक के अनुसार सिरमौर के राजा कर्मप्रकाश (सन् 1616-30) ने जहांगीर के गढ़वाल अधीनीकरण के एक असफल अभियान में मुगल सेना को सहायता प्रदान की थी।[13] यद्यपि समकालीन ग्रन्थ इस विषय पर मौन है, परन्तु सन् 1616-30 के मध्य सिरमौर-गढ़वाल एवं गढ़वाल-मुगल सम्बन्धों का विश्लेषण करने पर उक्त सैनिक अभियान की प्रबल सम्भावनायें प्रतीत होती हैं। इस सन्दर्भ मे सिरमौर एवं गढ़वाल के स्थानीय इतिहास से ज्ञात होता है कि गढ़वाल के राजा महिपति शाह ने सिरमौर पर आक्रमण कर उसके सीमावर्ती कालसी, बैराटगढ़ एवं कानीगढ़ दुर्गों पर अधिकार कर लिया था। सिरमौर के राजा कर्मप्रकाश ने गढ़वाली सेना के इस अतिक्रमण के विरुद्ध मुगल सम्राट से सहायता मांगी थी।[14] बहुत सम्भव है कि इसी कारण मुगल सेना ने गढ़वाल पर आक्रमण किया, परन्तु

मुगल सेना को कोई उल्लेखनीय सफलता प्राप्त न हो सकी। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम यह कह सकते है कि जहांगीर के शासनकाल में भी सिरमौर-मुगल सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण बने रहे।

सन् 1630 में कर्मप्रकाश की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र मानधाता प्रकाश ने सिरमौर की सत्ता संभाली।[15] मानधाता प्रकाश (सन् 1630-1654) मुग़ल सम्राट शाहजहाँ का समकालीन था। मानधाता प्रकाश ने अपने उन सीमावर्ती दुर्गों को प्राप्त करने के लिए मुग़ल सम्राट शाहजहाँ से सहायता मांगी, जिन पर उसके पिता के समय में गढ़वाल के राजा ने अधिकार कर लिया था। शाहजहाँ अपने राज्यारोहण के उत्सव के दिन से ही गढ़वाल के राजा महिपति शाह से क्षुब्ध था, क्योंकि गढ़वाल के राजा ने उस उत्सव में सम्मिलित होने के निमन्त्रण की उपेक्षा की थी और उत्सव में सम्मिलित नहीं हुआ था। यद्यपि शाहजहाँ सिरमौर के राजा को गढ़वाल के राजा के विरुद्ध तत्काल कोई सहायता नहीं दे सका, फिर भी सिरमौर के राजा ने मुग़ल सम्राट की पूर्ण सहानुभूति अवश्य प्राप्त कर ली थी। 'मआसिर-उल-उमरा' से ज्ञात होता है कि मुग़ल दरबार में गढ़वाल के राजा को दण्डित किये जाने की चर्चा के आधार पर सहारनपुर के सैन्याधिकारी मिर्जा मुग़ल ने गढ़वाल के राजा के अधीन प्रदेशों पर आक्रमण की रूपरेखा तैयार कर ली थी।[16]

राज्यारोहण के तुरन्त पश्चात शाहजहाँ को जुझार सिंह के विद्रोह का दमन करने के लिए आगरा के ग्वालियर जाना पड़ा।[17] तत्पश्चात दिसम्बर सन् 1629 से 1632 तक वह ख़ानेजहाँ लोदी के दमन में व्यस्त रहा।[18] इसी बीच उसकी प्रिय पत्नी मुमताज़ महल की मृत्यु हो गयी और कुछ समय तक वह विरक्त अवस्था में रहा। अन्ततः सिरमौर के राजा के निरन्तर आग्रह एवं गढ़वाल के राजा की उग्र नीतियों के परिणामस्वरूप सन् 1635 में शाहजहाँ ने शाही सेना को सिरमौर के राजा के समर्थन में गढ़वाल पर आक्रमण करने के आदेश पारित कर दिये। सम्राट शाहजहाँ ने इस अभियान का दायित्व सरकार दमन-ए-कोह काँगड़ा के तत्कालीन फौजदार नजाबत ख़ाँ को सौंपा।[19] मई सन् 1635 में सम्राट शाहजहाँ के आदेशानुसार नजाबत ख़ाँ ने सिरमौर के राजा मानधाता प्रकाश को साथ लेकर गढ़वाल पर आक्रमण करने के लिए प्रस्थान किया। नजाबत ख़ाँ एवं सिरमौर के राजा की सम्मिलित सेना ने यमुना के पूर्वी तट पर स्थित शेरगढ़ के दुर्ग से अपना सैनिक अभियान आरम्भ किया।[20]

'शाहजहाँनामा' से ज्ञात होता है कि कालसी दुर्ग पर विजय प्राप्ति के पश्चात सिरमौर के राजा ने नजाबत ख़ाँ को बैराट का दुर्ग जीतने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने नजाबत ख़ाँ से कहा कि "श्रीनगर के राजा ने मेरा बैराट का किला भी दबा रखा है, यदि मेरे साथ मुगल सेना भेजी जाय तो मैं उसे भी हस्तगत कर लूँ"।[21] फलस्वरूप सिरमौर एवं नजाबत खाँ की सम्मिलित सेना ने बैराटगढ़ पर आक्रमण कर इस दुर्ग पर भी अधिकार कर लिया। इन सफलताओं से प्रोत्साहित होकर नजाबत ख़ाँ गढ़वाल के पर्वतीय प्रदेश में प्रवेश कर गढ़वाल की राजधानी श्रीनगर की ओर बढ़ा। उसका उद्देश्य गढ़वाल के राजा को मुग़ल सम्राट की अधीनता स्वीकार कराने के लिए बाध्य करना था, परन्तु वह अपने उद्देश्य में असफल रहा और पराजित होकर लौटा।[22] समकालीन ग्रन्थों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि बैराटगढ़ पर विजय प्राप्ति के पश्चात सिरमौर का राजा अपने इन प्रदेशों की व्यवस्था के लिए वहीं रुक गया था। वह नजाबत ख़ाँ के अधीन मुगल सेना के साथ गढ़वाल के पर्वतीय प्रदेश में नहीं गया, क्योंकि आगे की घटनाओं में उसका कोई उल्लेख प्राप्त नहीं

होता।[23]

सन् 1645-50 के मध्य गढ़वाल के राजा पृथ्वीपति शाह ने सिरमौर के उन समीपवर्ती दुर्गों पर पुनः अधिकार कर लिया, जिन्हें सिरमौर के राजा मानधाता प्रकाश ने मुग़ल सेना की सहायता से हस्तगत कर लिया था।[24] मानधाता प्रकाश ने गढ़वाल के राजा द्वारा किये गये अतिक्रमण की पुनरावृत्ति के विरुद्ध मुग़ल दरबार में फ़रियाद की। सिरमौर के राजा ने मुग़ल सम्राट से निवेदन किया कि उसकी पश्चिमी सीमा पर स्थित दुर्गों पर से गढ़वाल के राजा के अवैध अधिकार को समाप्त करने के लिए उसे सैन्य सहायता प्रदान की जाय। मुग़ल सम्राट स्वयं गढ़वाल के राजा पृथ्वीपति शाह की स्वच्छन्दता से चिन्तित था।

28 जमादि-उस-सानी, 1064 हिजरी (सोमवार 16 मई, सन् 1653) को मुगल सम्राट शाहजहाँ ने सिरमौर के ज़मींदार (राजा) मानधाता प्रकाश के नाम एक फ़रमान जारी किया।[25] सिरमौर के राजा को सूचित किया गया कि जम्मू एवं काँगड़ा के फ़ौजदार ऐरिज ख़ाँ (ईरज ख़ाँ) को श्रीनगर (गढ़वाल) पर आक्रमण करने के लिए नियुक्त किया जा रहा है। तुम भी अपने साथ अपनी फ़ौज और अपने पड़ोसी ज़मींदारों की फ़ौज लेकर मुग़ल सेनानायक की सहायता के लिए प्रस्थान करो। चरक का कथन है कि ख़लीलउल्ला ख़ाँ को मानधाता प्रकाश के साथ मिलकर गढ़वाल पर आक्रमण करने के लिए नियुक्त किया गया।[26] चरक के उक्त कथन मे आंशिक रूप से संशोधन की आवश्यकता है, क्योंकि समकालीन ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि इस सन्दर्भ में ख़लीलउल्ला खाँ की नियुक्ति तो मानधाता प्रकाश के पुत्र सौभाग्य प्रकाश के समय में की गयी थी।[27]

सिरमौर के स्थानीय इतिहास से ज्ञात होता है कि सम्राट शाहजहाँ ने गढ़वाल अधीनीकरण की योजना की सफलता के पश्चात कालसी, बैराटगढ़ सहित गढ़वाल का पश्चिमी भू-भाग सिरमौर के राजा को प्रदान करने एवं दून प्रदेश मुग़ल साम्राज्य में सम्मिलित कर लेने की योजना बनायी थी।[28] सम्भवतः अभियान की तैयारी करने में लगभग एक माह (जून 1653) का समय निकल गया। तत्पश्चात जुलाई में वर्षा ऋतु आरम्भ हो जाने के कारण अभियान को कुछ समय के लिए स्थगित कर देना पड़ा। इससे पहले कि पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार गढ़वाल पर आक्रमण किया जाता, सिरमौर के राजा मानधाता प्रकाश की मृत्यु हो गयी।[29]

मानधाता प्रकाश की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र सौभाग्य प्रकाश सिरमौर का राजा बना। इनायत ख़ाँ शाहजहाँ के शासनकाल के 29वें वर्ष की घटनाओं का उल्लेख करते हुए लिखता है कि सिरमौर का ज़मींदार (सौभाग्य प्रकाश) अभी तक शाही सेवा मे सम्मिलित नहीं हुआ था।[30] जब (सन् 1654 में) ख़लीलउल्ला ख़ाँ को श्रीनगर (गढ़वाल) के राजा के दमन के लिए नियुक्त किया गया, तब सौभाग्य प्रकाश ने शाही सेवा स्वीकार कर ली। शाहजहाँ ने सौभाग्य प्रकाश को 'सिमाक प्रकाश' की उपाधि प्रदान की और एक शाही फ़रमान द्वारा उसे अपने अमीरों में सम्मिलित कर लिया।[31] ऐसा प्रतीत होता है कि सिरमौर के राजा को अपने पक्ष में करने के लिए शाहजहाँ ने कूटनीति से काम लिया। उसने सौभाग्य प्रकाश को 'सिमाक प्रकाश' की उपाधि प्रदान की।[32] शाही अनुकम्पाओं से प्रेरित होकर सौभाग्य प्रकाश ने न केवल शाही पक्ष ग्रहण किया, बल्कि गढ़वाल के राजा के विरुद्ध मुग़ल सेना को सहयोग देने के लिए भी तैयार हो गया।

'मआसिर-उल-उमरा' के अनुसार सफ़र, 1065 हिजरी (दिसम्बर, सन् 1654) एवं 'शाहजहाँनामा' के अनुसार अक्टूबर-नवम्बर सन् 1654 मे ख़लीलउल्ला ख़ाँ एवं सिरमौर के राजा सौभाग्य प्रकाश की

सम्मिलित सेना ने गढ़वाल के राजा के अधीन दून प्रदेश पर आक्रमण किया।[33] सिरमौर के राजा की सेना की सहायता से ख़लीलउल्ला ख़ाँ ने दून (वर्तमान देहरादून) पर अधिकार कर लिया।[34] सम्पूर्ण दून घाटी पर सिरमौर के राजा एवं मुग़लों की सम्मिलित सेना द्वारा अधिकार कर लिये जाने के साथ ही सिरमौर के राजा ने अपने उन सीमावर्ती दुर्गों पर भी अधिकार कर लिया जिन पर कुछ वर्ष पूर्व गढ़वाल के राजा ने कब्जा कर लिया था। उक्त अभियान में गढ़वाल के विरुद्ध सिरमौर के राजा का सहयोग प्राप्त करने के लिए शाहजहाँ ने सौभाग्य प्रकाश को यह प्रलोभन दिया था कि गढ़वाल के राजा को परास्त करने के पश्चात गढ़वाल का पश्चिमी भू-भाग सिरमौर के राजा को दे दिया जायेगा।[35] चूंकि दून प्रदेश पर शाही सेना को अधिकार हो जाने के पश्चात यह अभियान स्थगित कर दिया गया था,[36] अत: सिरमौर का राजा मुगल सम्राट शाहजहाँ द्वारा आश्वस्त किये जाने के पश्चात भी गढ़वाल का पश्चिमी भू-भाग प्राप्त न कर सका।

इस अभियान की समाप्ति के पश्चात 11 रबी-उस-सानी, 1065 हिजरी (फरवरी 9, शुक्रवार, सन् 1655) शाहजहाँ ने सिरमौर के राजा के नाम एक फ़रमान जारी किया। इस फ़रमान से ज्ञात होता है कि मुग़ल सम्राट ने सिरमौर के राजा सौभाग्य प्रकाश को आश्वासन दिया कि इस अभियान का सेनानायक ख़लीलउल्ला ख़ाँ सिरमौर के राजा के द्वारा किये गये सहयोग के लिए जिस पुरस्कार की संस्तुति करेगा, वह सिरमौर के राजा को दिया जायेगा।[37] ख़लीलउल्ला ख़ाँ ने सिरमौर के राजा के सहयोग के लिए किस पुरस्कार की संस्तुति की और सिरमौर के राजा को क्या पुरस्कार प्राप्त हुआ? समकालीन ग्रन्थ इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं देते हैं। तथापि 22 जमादि-उल-अव्वल, 1064 हिजरी अर्थात मार्च सन् 1655 में सिरमौर के राजा के नाम जारी सम्राट शाहजहाँ के एक फ़रमान से ज्ञात होता है कि शाहजहां ने सौभाग्य प्रकाश को कोटा पर अधिकार करने की अनुमति प्रदान की थी।[38]

शाही फ़रमान प्राप्त हो जाने पर सिरमौर के राजा सौभाग्य प्रकाश ने कोटा पर अधिकार कर लिया। कोटा की स्थिति स्पष्ट नहीं है। सम्भवत: कोटा से तात्पर्य सिरमौर के निकटवर्ती कोटा उपत्यकता से है।[39] चरक का कथन है कि कोटा पर अधिकार करने के लिए मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब ने सौभाग्य प्रकाश को अनुदान दिया था।[40] चरक के इस कथन मे संशोधन की आवश्यकता है, क्योंकि यह पूर्णतया स्पष्ट है कि सन् 1655 में मुग़ल सम्राट शाहजहाँ था, न कि औरंगज़ेब। 'मआसिर-उल-उमरा' से ज्ञात होता है कि सन् 1657 में सम्राट शाहजहाँ ने सिरमौर की दक्षिणी सीमा पर स्थित मुखलिसपुर नामक स्थान की यात्रा की थी। इस अवसर पर सिरमौर का राजा भी मुग़ल सम्राट से भेंट करने के लिए उपस्थित हुआ होगा।

शाहजहाँ के पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकार संघर्ष में सिरमौर के राजा सौभाग्य प्रकाश ने औरंगज़ेब का साथ दिया। सामूगढ़ के युद्ध में पराजित होने के पश्चात दारा शिकोह पंजाब भाग गया। उसका पुत्र सुलेमान शिकोह इलाहाबाद दुर्ग से निकलकर अपने पिता की सहायता के लिए पंजाब जाना चाहता था। औरंगजेब की घेराबन्दी के कारण सुलेमान शिकोह हरिद्वार से आगे न बढ़ सका। बाध्य होकर उसे हरिद्वार से ऊपर की पहाड़ियों में गढ़वाल के राजा पृथ्वीपति शाह की शरण में जाना पड़ा[41] श्रीनगर (गढ़वाल) से सिरमौर के भाबर में होकर सुलेमान शिकोह पंजाब के मैदान में उतर सकता था अथवा संदेशवाहकों द्वारा अपने पिता से सम्पर्क स्थापित कर सकता था।[42] औरंगज़ेब चाहता था कि सुलेमान शिकोह एवं दारा शिकोह के बीच सम्पर्क स्थापित

ने होने पाये और उसे पिता एवं पुत्र के संयुक्त मोर्चे का सामना न करना पड़े।

औरंगज़ेब के इस उद्देश्य की पूर्ति में सिरमौर का राजा सौभाग्य प्रकाश सहायक सिद्ध हो सकता था। अत: औरंगज़ेब ने अपने पुत्र के द्वारा एक गोपनीय फ़रमान सिरमौर के राजा सौभाग्य प्रकाश को भेजा। इस फ़रमान द्वारा औरंगज़ेब ने सिरमौर के राजा को आदेश दिया कि वह सुलेमान शिकोह एवं दारा शिकोह के बीच कोई भी सम्पर्क स्थापित न होने दे।[43] सिरमौर के राजा सौभाग्य प्रकाश ने औरंगज़ेब की इच्छानुसार सीमाओं पर सतर्कता बढ़ा दी। उसने औरंगज़ेब को सूचित किया कि वह सुलेमान शिकोह एवं दारा शिकोह के बीच किसी भी प्रकार का सम्पर्क स्थापित नहीं होने देगा।[44]

दूसरी ओर औरंगज़ेब गढ़वाल के राजा पृथ्वीपति शाह पर दबाव डाल रहा था कि वह शरणागत सुलेमान शिकोह को अपने राज्य से बाहर निकाल दे अथवा उसे बन्दी बनाकर सौंप दे। गढ़वाल के राजा ने औरंगज़ेब की इस मांग को ठुकरा दिया। फलस्वरूप औरंगज़ेब ने गढ़वाल के राजा से बलपूर्वक सुलेमान शिकोह को प्राप्त करने के लिये योजना बनाई। सम्राट शाहजहाँ की सन् 1653-55 की योजनानुसार औरंगज़ेब ने भी गढ़वाल के राजा के विरुद्ध सिरमौर के राजा की सैनिक शक्ति का उपयोग करने का निश्चय किया। सिरमौर का राजा गढ़वाल अधीनीकरण के अभियान में विशेष सहायक सिद्ध हो सकता था। फलस्वरूप औरंगज़ेब ने सिरमौर के राजा सौभाग्य प्रकाश के नाम शाही अनुकम्पाओं एवं उपाधियों से युक्त एक फ़रमान जारी किया।

उक्त फ़रमान द्वारा सौभाग्य प्रकाश को सूचित किया गया कि राजा राजरूप को श्रीनगर (गढ़वाल) पर आक्रमण करने के लिए नियुक्त किया गया है। अत: तुम भी अपने इस पुराने शत्रु के विरुद्ध मुग़ल सेना का साथ दो। शाहजहाँ की भांति औरंगज़ेब ने भी सिरमौर के राजा को यह प्रलोभन दिया कि गढ़वाल के राजा की पराजय के पश्चात गढ़वाल का पश्चिमी भू-भाग सिरमौर के राजा को दिया जायेगा।[45] डबराल लिखते हैं कि सिरमौर के राजा को फुसलाने के लिए इस फ़रमान द्वारा औरंगजेब ने उसे 'कुदवत-उल-इमसाल' की उपाधि प्रदान की।[46] डबराल ने इस उपाधि को उद्धृत करने में सतर्कता से काम नहीं लिया है। अत: उनके द्वारा किया गया उच्चारण त्रुटिपूर्ण हो गया है, क्योंकि उक्त फ़रमान में यह उपाधि 'कुदवत-उल-इमसाल' नहीं, बल्कि 'क़िवदतुल इम्तिसाल' है। 'क़िवदतुल इम्तिसाल' अर्थात् आदेशों का पालन करने वालों मे श्रेष्ठ।[47]

अत: सिरमौर का राजा सौभाग्य प्रकाश गढ़वाल के राजा के विरुद्ध मुग़ल सेना की सहायता के लिए तैयार हो गया। योजनानुसार सिरमौर की सेना ने गढ़वाल की पश्चिमी सीमा पर आक्रमण किया। सिरमौर की सेना गढ़वाली सेना को धकेलती हुई श्रीनगर से 45 किमी0 दूर स्थित माली देवल नामक स्थान तक जा पहुंची। दक्षिण-पश्चिम से मुग़ल सेना एवं पूर्व से कुमाऊँ की सेना के निरन्तर दबाव से त्रस्त होकर गढ़वाल के राजा पृथ्वीपति शाह के पुत्र मेदिनीशाह ने औरंगज़ेब की मांग स्वीकार कर ली। मेदिनीशाह ने शरणागत राजकुमार सुलेमान शिकोह को औरंगज़ेब को सौंप दिया।[48]

गढ़वाल के राजा के विरुद्ध मुगल सेना को सहायता प्रदान कर सिरमौर के राजा सौभाग्य प्रकाश को शाही अनुकम्पा एवं मुग़ल दरबार की सहानुभूति से ही सन्तोष करना पड़ा। पूर्व की भांति इस बार भी गढ़वाल का पश्चिमी भू-भाग प्राप्त करने की उसकी अभिलाषा अधूरी ही रही। शाहज़ादा सुलेमान शिकोह को सौंप

देने के पश्चात गढ़वाल के राजा का पुत्र मेदिनीशाह सम्राट औरंगज़ेब का कृपापात्र एवं मनसबदार बन गया था। अत: गढ़वाल के विरुद्ध किया जा रहा सैनिक अभियान रोक दिया गया। डबराल लिखते हैं कि उक्त अभियान में मुग़ल सेना को सहयोग देने के पुरस्कारस्वरूप सिरमौर के राजा को कलाखर नामक पर्वतीय क्षेत्र प्राप्त हुआ।[49] चरक इम्पीरियल गज़ेटियर ऑफ़ इण्डिया के आधार पर सूचित करते हैं कि औरंगज़ेब की अनुकम्पा से सिरमौर के राजा ने कौलागढ़ पर अधिकार कर लिया था।[50]

सन् 1664 में सौभाग्य प्रकाश की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र बुद्धप्रकाश सिरमौर का राजा बना। ऐतिहासिक दस्तावेज़ों से ज्ञात होता है कि सन् 1667 में औरंगज़ेब ने बुद्धप्रकाश को उसके पिता के स्थान पर सिरमौर के ज़मींदार (राजा) के रूप में मान्यता प्रदान की थी।[51] डबराल एवं भक्त दर्शन सौभाग्य प्रकाश की मृत्यु (सन् 164) के पश्चात् सिरमौर की सत्ता संभालने वाले राजा का नाम रूद्रप्रकाश लिखते हैं।[52] इन दोनों ही विद्वानों के उक्त कथन में संशोधन की आवश्यकता है, क्योंकि मुग़ल राजकुमारी जहाँआरा द्वारा समकालीन सिरमौर के राजा के नाम जारी निशानों में सिरमौर के राजा का नाम बुद्धप्रकाश लिखा गया है।[53]

बुद्धप्रकाश (सन् 1664-84) के प्रभुत्वकाल में भी सिरमौर-मुग़ल सम्बन्ध मधुर बने रहे। चरक सूचित करते हैं कि बुद्धप्रकाश ने सम्राट औरंगज़ेब के आदेशानुसार पिन्जौर पर आक्रमण कर उसे मुग़ल सम्राट के लिये जीता था। स्थानीय इतिहास से ज्ञात होता है कि गढ़वाल के राजा फतेहशाह ने अपने प्रभुत्वकाल के आरम्भ में सिरमौर की पूर्वी सीमा पर स्थित बैराट एवं कालसी के दुर्गों पर अधिकार कर लिया था।[54] सिरमौर के राजा बुद्धप्रकाश ने सन् 1669 से 1680 तक जहाँआरा को अनेक अर्ज़दाश्तें भेजकर आग्रह किया कि वह गढ़वाल के राजा द्वारा कब्ज़ा लिये गये सिरमौर के सीमावर्ती क्षेत्रों को गढ़वाल के राजा से खाली कराने के लिए सम्राट औरंगजेब से गढ़वाल के राजा के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई कराने की सिफ़ारिश करें।[55] सन् 1684 में बुद्धप्रकाश की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र मेदिनीप्रकाश ने सिरमौर की सत्ता संभाली। बुद्धप्रकाश एक दशक तक राजकुमारी जहाँआरा के माध्यम से मुग़ल सम्राट की सहानुभूति एवं समर्थन प्राप्त करता रहा। उसके समय में सिरमौर-मुग़ल सम्बन्ध मधुर बने रहे, परन्तु अपने प्रभुत्त्व काल में वह गढ़वाल के राजा द्वारा अधिकृत प्रदेशों को पुन: प्राप्त करने में सफल न हो सका। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि मुग़ल सम्राट के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के पश्चात भी बुद्धप्रकाश अपने बैराट एवं कालसी के दुर्गों पर पुनराधिकार के लिए मुग़ल सम्राट से सहायता क्यों प्राप्त न कर सका? राजकुमारी जहाँआरा की पूर्ण सहानुभूति प्राप्त होने पर भी इस सम्बन्ध में सिरमौर के राजा की अर्ज़दाश्तों पर मुग़ल सम्राट द्वारा तुरन्त कार्यवाही क्यों नही की गयी?

इस सम्बन्ध में जहाँआरा के निशानों का अध्ययन एवं विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि बैराट एवं कालसी के दुर्गों पर गढ़वाल का राजा भी अपना उतना ही दावा प्रस्तुत कर रहा था, जितना कि सिरमौर का राजा।[56] अत: वास्तविकता की जांच किये बिना कोई निर्णय लेना सम्भव न था। जांच के पश्चात यह स्पष्ट हो जाने पर कि बैराट एवं कालसी के दुर्ग सिरमौर के राजा के हैं, जहाँआरा ने गढ़वाल के राजा को इन प्रदेशों को छोड़ देने के लिए निशान जारी कर आवश्यक निर्देश दिये होंगे।[57] इस पर भी गढ़वाल का राजा इन प्रदेशों को छोड़ने में आना-कानी करता रहा। गढ़वाल के राजा से इन प्रदेशों को खाली कराने के लिए यह आवश्यक था कि उसके विरुद्ध सिरमौर के राजा को सैनिक सहायता प्रदान की जाती।[58]

जैसा कि जहाँआरा के सन् 1678 के निशान एवं समकालीन लेखक ख़ाफी ख़ाँ के विवरणों से ज्ञात होता है कि उस समय मुग़ल सम्राट एवं मुग़ल सेनानायक दक्षिणी अभियानों में व्यस्त रहे। इसी बीच राजकुमार अकबर ने विद्रोह कर दिया और राजपूताना में भी विद्रोह भड़क उठा। दक्षिण में शिवाजी की लूटमार ने मुग़ल सम्राट को अत्यधिक चिंतित कर दिया। सन् 1680-81 से 1684-85 तक औरंगज़ेब बीजापुर एवं गोलकुंडा के विरुद्ध सैनिक अभियानों में व्यस्त रहा।[59] साम्राज्य की इन विकट एवं गम्भीर समस्याओं के सम्मुख सिरमौर एवं गढ़वाल के राजाओं का आपसी झगड़ा मुग़ल सम्राट के लिए गौण समस्या एवं सामान्य विषय ही था। इसी बीच सिरमौर के राजा बुद्धप्रकाश एवं उसकी समर्थक राजकुमारी जहाँआरा दोनों की ही मृत्यु हो जाने से इस समस्या का शीघ्र समाधान नहीं हो सका।[60]

बुद्धप्रकाश के पश्चात उसके पुत्र मेदिनीप्रकाश ने इस समस्या की ओर औरंगज़ेब का ध्यान आकर्षित किया। सन् 1686 में उसने सम्राट को एक अर्ज़दाश्त भेजी।[61] उसने बैराटगढ़ व कालसी के दुर्गों पर गढ़वाल के राजा के अवैध अधिकारों को समाप्त करने के लिए मुग़ल सम्राट से सैनिक सहायता प्रदान करने का आग्रह किया। अन्ततः औरंगज़ेब ने गढ़वाल के राजा के विरुद्ध सेना भेजने के आदेश पारित किये। मुग़ल सेना द्वारा बैराट एवं कालसी की घेराबन्दी के कारण गढ़वाल के राजा ने इन दुर्गों को छोड़ दिया।[62] एक लम्बे अन्तराल के पश्चात सन् 1686-87 में इन दुर्गों पर पुनः सिरमौर के राजा का अधिकार स्थापित हो गया। सिरमौर के राजा मेदिनी प्रकाश के प्रभुत्वकाल (सन् 1684-1704) में भी सिरमौर-मुग़ल सम्बन्ध मधुर बने रहे।

III

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सन् 1556-1707 की अवधि में सिरमौर के राजाओं और मुग़ल शासकों के बीच परस्पर सहयोग और सद्भावनापूर्ण सम्बन्ध बने रहे। सिरमौर के राजाओं ने मुग़ल शासकों की सम्प्रभुता की सर्वोच्चता को कोई चुनौती नहीं दी और मुग़ल शासकों ने भी सिरमौर के राजाओं की क्षेत्रीय सम्प्रभुता एवं वंशानुगत अधिकारों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया। मुग़ल शासकों ने हिमालयी क्षेत्र में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए सिरमौर के राजाओं की सैन्य शक्ति का पूर्ण लाभ उठाया और सिरमौर के राजाओं ने अपने स्थानीय शत्रुओं के विरुद्ध मुग़ल शासकों से सैनिक एवं राजनीतिक-कूटनीतिक समर्थन प्राप्त कर अपने राज्य और अपने राजसिंहासन को सुरक्षित बनाये रखा।

सन्दर्भ

1. कश्यप, पद्मचन्द, हिमाचल प्रदेश: ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन, पृ0 91, दिल्ली, 1981
2. चरक, सुखदेव, हिस्ट्री एन्ड कल्चर ऑफ़ हिमालयन स्टेट्स, भाग 2, पृ0 181, दिल्ली, 1978 मध्ययुगीन सिरमौर के 'प्रकाश' राजवंश के लिए देखें, इम्पीरियल गजेटियर ऑफ़ इण्डिया: पंजाब, खण्ड 2, पृ0 357, कलकता, 1808.
3. हबीब, मौहम्मद एवं निज़ामी, ख़लीक अहमद द्वारा सम्पादित, दिल्ली सुल्तनत, भाग 1, पृ0 226 दिल्ली, 1977.
4. यहिया-बिन अहमद, तारीख़-ए-मुबारकशाही, हिन्दी रूपान्तर, शम्र, एम0एल0 भारत का इतिहास, भाग 4, पृ0 11 आगरा, 1971.

5. अबुलफ़ज्ल, आईन-ए-अकबरी, ब्लॉकमैन, रि-प्रिन्ट, भाग 2, पृ0 443, दिल्ली, 1997.
6. ख़ाँ, शाहनवाज़ एवं हयी, अब्दुल, बेवरिज-बेनी प्रसाद, भाग 1, पृ0 414, 420, 421, पटना, 1979.
7. अबुलफ़ज्ल, आईन, वही, पृ0 369, मआसिर-उल-उमरा, वही भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1026.
8. वही उपरोक्त.
9. अबुलफ़जल, अकबरनामा, बिब0इंडि0,भाग 2, पृ0 76-79, कलकत्ता, 1879.
10. तबातबाई, जलाल, शशफतेह-ए-काँगड़ा, हिन्दी रूपान्तर, शर्मा0एम0एल0, भारत का इतिहास, भाग 6, पृ0 391 एवं प्रसाद, बेनी, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ0 289-290, इलाहाबाद, 1962.
11. ख़ाँ, इनायत, शाहजहाँनामा, बेगले एण्ड देसाई, पृ0 507, दिल्ली, 1995.
12. चरक, सुखदेव सिंह, वही, भाग 2, पृ0 182.
13. चरक, वही, भाग 2, पृ0 182.
14. डबराल, शिवप्रसाद, उत्तराखण्ड का इतिहास,भाग 4, पृ0 267, दुगड्डा गढ़वाल, 1977.
15. चरक, सुखदेव सिंह, वही, भाग 2, पृ0 182.
16. ख़ाँ, शाहनवाज़, हयी, अब्दुल, वही, भाग 2,खण्ड 1, पृ0 366.
17. सक्सेना, बनारसी प्रसाद, मुग़ल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 331, जयपुर, 1974.
18. सक्सेना, बनारसी प्रसाद वही, पृ0 331.
19-23. मुन्शी, देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 96, दिल्ली, 1975, ख़ाँ, शाहनवाज़, हयी, अब्दुल, वही, पृ0 367.
24. डबराल, शिवप्रसाद, वही, भाग 4, पृ0 278-280.
25.-26. ख़ाँ, शाहनवाज़, हयी, अब्दुल, वही, भाग 1, पृ0 768.
27. मुन्शी, देवी प्रसाद, वही, पृ0 265.
28. सिरमौर गज़ेटियर, सम्पादक, नेगी, ठाकुरसेन, पृ0 13, अलीगढ़, 1973.
29-30. ख़ाँ, शाहनवाज़, हयी, अब्दुल, वही, भाग 1, पृ0 685.
31-35. ख़ाँ, इनायत, शाहजहांनामा, वही, पृ0 507, चरक, वही, भाग 2, पृ0 182 एवं डबराल, वही, पृ0 280.
36-39. ख़ाँ, शाहनवाज़, हयी, अब्दुल, वही, भाग 1, पृ0 768-69, ख़ाँ, इनायत, वही, पृ0 507.
40-42. सिरमौर गजेटियर, वही, पृ0 13, डबराल, वही, भाग 4, पृ0 284-285.
43. चरक, सुखदेव सिंह, वही, भाग 2, पृ0 182.
44. खाँ, शाहनवाज़, हयी, अब्दुल, वही, भाग 1, पृ0 339.
45. सैयद, अनीस जहाँ, औरंगजेब इन मुन्तख़ब-उल-लुबाब, पृ0 107, 108, बम्बई, 1977.
46-50. डबराल, वही, पृ0 209, 210, 298, सिरमौर गज़ेटियर, पृ0 13,14.
51. देखें, मेरा आलेख ''मुग़लशासकों एवं मध्य हिमालयी क्षेत्र के राजाओं के बीच उपहारों एवं उपाधियों का आदान-प्रदान'' इतिहास, अंक 1, इंडियन कांउसिल ऑफ़ हिस्टोरिकल, रिसर्च, दिल्ली, 2003.

52-54. रतूड़ी, हरिकृष्ण, गढ़वाल का इतिहास, पृ0 187, टिहरी, 1979, डबराल, वही, भाग 4, पृ0 304 एवं चरक, सुखदेव, वही, भाग 2, पृ0 187.

55. तिरमिज़ि, एस0ए0आई0, इडिक्टस फ्रॉम मुगल हरम, पृ0 94, 95, दिल्ली, 1978.

56. डबराल, वही, भाग 4, पृ0 322-323.

57. तिरमिज़ि, एस0ए0आई0, वही0 पृ0 94, 97, 104, 108.

58. सिरमौर गज़ेटियर, वही, पृ0 13, डबराल, वही, भाग 4, पृ0 322.

59-62. तिरमिज़ि, एस0ए0आई0, वही, पृ0 104, 105, 109, 112, डबराल, वही, भाग 4, पृ0 323 एवं सिरमौर गज़ेटियर, वही, पृ0 53.